Dr. Sangita Kumari Saha
B.A. IV-I (H) 2nd paper

Nature of Verbal learning.

मनुष्यों के व्यवहारों को समझने में वाचिक शिक्षण का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। वाचिक शिक्षण में सांकेतिक चिन्हों या प्रतीकों जैसे: अक्षर, शब्द, वाक्य अंक आदि का उपयोग किया जाता है जो मानव जाति की विशिष्ट विशेषता है। उसी विशिष्ट विशेषता के आधार पर मनुष्य और अन्य प्राणियों में विभेद किया जाता है। मनुष्य का चिन्तन, इन सारे सूचनाओं को ग्रहण करने और उन्हें संचित करने, सूचनाओं को संगठित रूप प्रदान करने, समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने में शाब्दिक प्रतीकों का ही सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। अतः मानव शिक्षण की व्याख्या में वाचिक शिक्षण का स्थान आवश्यक है।

वाचिक शिक्षण से तात्पर्य ऐसे शिक्षण से है जिसमें अक्षरों या अक्षरों से बने सार्थक या निरर्थक शब्दों, वाक्यों, चिन्हों, अंकों आदि प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार के शिक्षण में व्यक्ति की उन प्रक्रियाओं या घटनाओं का अध्ययन किया जाता है जिसमें वाचिक इकाइयों को परस्पर मिलाकर उनके क्रमों को सीखता है। शाब्दिक माध्यमों से व्यक्ति अपने मनोभावों, विचारों, अनुभवों आदि को व्यक्त करता है। स्पष्ट है कि वाचिक शिक्षण में शाब्दिक इकाइयों के अनेक पक्षों को सीखा जाता है तथा उनके अर्थों को समझा जाता है।

वाचिक शिक्षण का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वातावरण के साथ समायोजन या अभियोजन स्थापित करने में वाचिक कौशल की अहम भूमिका होती है। इस कौशल में शाब्दिक प्रतीकों के माध्यम से बातचीत करने, लिखने, पढ़ने एवं समझने, गणना आदि की योग्यताएं आती हैं जिस पर व्यक्ति का समायोजन निर्भर करता है।

वाचिक शिक्षण का क्षेत्र काफी व्यापक है। किन्तु अध्ययन की सुविधा के लिए हम इसके क्षेत्र को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं —

Ajanta Products Officer

Scanned with CamScanner

(i) Materials used in Verbal learning.
(ii) methods of measuring verbal learning.
(iii) Factors influencing verbal learning.

(i) Materials used in verbal learning.

वाचिक शिक्षण संबंधी प्रयोगों के अनेक प्रकार की सामग्रियों का उपयोग किया जाता है जैसे; prose extracts, poems वर्णों के संयोग से बने निरर्थक पद, Meaningful words, stories इत्यादि।
लेकिन प्रयोगात्मक अध्ययनों के शिल्पिक, बारीकियों, नियंत्रित प्रदत्त की सुलभता Measurable characteristics की विविधता एवं Scientific researches की दृष्टि से जर्मन मनोवैज्ञानिक Hermann Ebbinghaus (1850-1909) ने वर्णाक्षरों के संयोग से nonsense syllables का उपयोग अधिक उपयुक्त माना है और वाचिक शिक्षण एवं स्मृति का अध्ययन करने में निरर्थक पदों का ही उपयोग किया जाता है।
निरर्थक पदों के निर्माण में प्रायः तीन वर्णों का उपयोग किया जाता है जिनमें दो व्यंजन वर्णों के बीच एक स्वर वर्ण रखा जाता है इसलिए इस प्रकार के पदों को त्रिवर्णीय CVC पद कहा जाता है। CVC trigram पद का प्रयोग पहला अक्षर Consonant दूसरा अक्षर स्वर vowel तथा तीसरा अक्षर पुनः Consonant है।
For example, LOZ, WUQ, KET etc.

कभी-कभी निरर्थक पदों के निर्माण में केवल व्यंजन अक्षरों का ही उपयोग किया जाता है ऐसे पदों को CCC Trigram कहते हैं
जैसे XMC, WNT etc.

—×—